भारत में महिलाओं का राजनीतिक विकास

डॉ. मैना निर्वाण, व्याख्याता, राजनीति विज्ञान,

राज. डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर,(राज.)

यदि ईश्वर प्रकाश पुंज है, तो नारी उसकी किरण है |यदि ईश्वर शब्द है तो नारी अर्थ है | फिर क्या कारण है कि शक्ति स्वरूपा, मातृहृदया नारी परिवारऔर समाज में उचित स्थान पाने के लिए आज भी संघर्षरत है ? इसी संघर्ष की एक सशक्त कड़ी के रूप में महिलाओं का राजनीतिक विकास विमर्श का विषय है |

राजनीतिक विकास क्या है | इसे जानने के लिए हम लुसियन पाई कीराजनीतिक विकास की अवधारणा को देखते है तो पातें है कि लुसियन पाई ने राजनीतिक विकास में तीन पहलुओं को शामिल किया है :-

1 . समानता के लिए संवेदनशीलता,

2 . राज्य और समाज व्यवस्था को प्रभावित करने की क्षमता एवं,

3.राज्य व्यवस्था की इकाइयों से सम्बन्ध |[i]

इन पहलुओं पर जब विचार करते है तो पाते है कि महिलाओं के राजनीतिक विकास का स्तर बहुत अधिक शौचनीय है | भारत में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से महिलाओं का विकास तभी संभव है , जब महिलाएं देश के समग्र विकास की प्रक्रिया में भाग ले|

राजनीति व प्रशासन में लैंगिक आधार पर दोनों वर्गों की उपस्थिति का उद्देश्य सार्वजनिक क्षेत्र उन्हें मान्यता दिलाना है | शासन में महिलाओं की प्रस्थापना का आशय केवल उनको प्रतिनिधित्व दिलाना ही नहीं है, बल्कि शासन में अभिव्यक्ति, शैली और राजनीतिक संस्कृति का परिष्कार करना भी है |[ii]

राष्ट्रीय आन्दोलन व महिलाएं :-

भारत में महिलाओं की राजनीति विकास यात्रा 1917 से प्रारम्भ होतीहैजब सरोजनी नायडू के नेतृत्व में मताधिकार की मांग को उठाया गया | कड़े संघर्ष के बाद 1921 में कुछ शर्तो के साथ महिलाओं को मताधिकार प्राप्त हुआ |[पपप]भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया | महात्मा गाँधी ने महिलाओं में राजनीतिक चेतना की नई अलख जगाई | उन्होंने कहा " स्त्री पुरुष की सहचरी है, उसे भी समान मानसिक योग्यता प्राप्त है | उसे अधिकार है की वह पुरुषों के छोटे बढ़े व विस्तृत क्रिया कलापों में भाग ले और उसे भी पुरुषों के समान स्वतन्त्रता का अधिकार है |.....| [पअ]महिलाओं के अहिंसात्मक व सहनशीलता के गुणों का उपयोग गाँधी जी ने सत्याग्रह आन्दोलन में किया | राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान कई महिला संगठनों का उदय हुआ | जैसे 1917 में वुमेन इन्डियन एसोसिएशन, 1926 में नेशनल काउंसिल ऑफ़ इन्डियन वुमैन और सन 1927

अखिल महिला परिषद | 1934 में गुजरात की " ज्योति संघ " ने महिला शक्ति को सामने लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई | अहिंसात्मक संघर्ष के साथ - साथ कई महिलाएं क्रांतिकारी रूप में भी सामने आई | उनमें भीकाजी, कामा, पेरिन डी. एस.कैप्टन, बंगाल की देवी चौधरानी, पंजाब की सुशीला देवी, दिल्ली की रूपवती जैन, कोलकत्ता की कल्पना दत्त, रानी झाँसी ब्रिगेड की इंचार्ज लक्ष्मी सहगल आदि प्रमुख थी |

स्वतंत्र भारत की राजनीति वमहिलाएं :-

भारत के समान ही विश्व के अन्य देशों में महिलाओं को अपने राजनीतिकअधिकारों के लिए लम्बा संघर्ष करना पड़ा | इंग्लैण्ड में 1918 में,फ्रांस में 1928 में, अमेरिका में 1944 में महिलाओं को मताधिकार प्राप्त हुआ किन्तु भारत में स्वतन्त्रता के बाद स्वाभाविक और सहज रूप में पुरुषों के साथ ही महिला मताधिकार भी प्राप्त हो गया, और यह आशा जगी कि अब महिलाओं की बहुत सी समस्याएँ सुलझ जायेंगी |

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद महिलाओं ने भारतीय राजनीतिक पटल पर अपनी अमित छाप छोड़ी जैसे विजयलक्ष्मी पंडित, सुचेता कृपलानी,सरोजिनी नायडू, श्रीमति इंदिरा गाँधी | किन्तु ये नाम अँगुलियों पर गिने जाने वाले है | आम भारतीय महिला का राजनीति से कोई सरोकार नहीं रहा | जिस सक्रिय भूमिका का परिचय स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान भारतीय महिलाओं ने दिया, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उसमें उदासीनता आने लगी |

2001 की जनगणना के अनुसार भारत में 48.3 प्रतिशत महिलाएं है , लेकिन भारत की सम्पूर्ण कार्य शक्ति में महिला कार्यकर्ताओं की संख्या कम है | आधी शक्ति व क्षमता होने के बावजूद राजनीतिक, सामाजिक, एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका व उनकी भागीदारी कमजोर स्थिति को दर्शाती है तथा उनकी सहभागिता पर प्रश्न चिन्ह लगाती है | क्या कारण है कि भारतीय राजनीति में महिलाओं के लिए किसी प्रकार का प्रतिबंद न होने के बावजूद भी वे भारत के आम चुनावों में बहुत कम संख्या में भाग लेती है तथा जो भाग लेती है, वे प्राय: राजनीति की ऊँची कुर्सी तक पहुंचने अथवा उसे प्राप्त करने में असमर्थ रहती है | उनका सारा परिवार राजनीति में है, परन्तु उनकी खुद की जमीन नहीं है, जहाँ वे उड़ान भरकर राजनीतिक बुलंदियों को छू सके |

पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को राजनीति में प्रतिनिधित्व आसानी से नहीं दिया जाता | प्रारम्भ में तो पुरुष समाज सुधारकव क्रन्तिकारी विचारक का मुखौटा ओढ़ कर वाह वाही लुटने हेतु महिलाओं के राजनीतिक विकास की बात करता है,और जब महिलाएं राजनीति की A,B,C,D सीख जाती है तो पुरुष उसे महज सहायक या सहयोगी (subordinator) ही बनाये रखना चाहता है, महत्वपूर्ण दायित्व देना नहीं चाहता | और अगर कोई जुझारू महिला सारे प्रतिबंधों को तोड़ती हुई आगे बढ़तीहै तो उसे नीचे गिराने के प्रयास शुरू हो जाते है | पुरुष समाज में खलबली मच जाती है |जैसा की श्रीमति प्रमिला दंडवते ने कहा है " सत्ता में भागीदारी देने के लिए पुरुष राजनीतिज्ञ तैयार नहीं है, क्योंकि 38 प्रतिशत आरक्षण से लोकसभा में 180 से 189 सीटें देनी पड़ेगी |"[v]अजमेर जिले के एक गाँव में जाति पंचायत के सभा स्थल वालेमंच पर एक सूचना पट्ट लगा हुआ है|

जिसका आदेश है कि महिलाएं और निम्न जातिके लोग यदि इस पर चढ़ेंगे तो उन पर 101 रूपये जुर्माना कर दिया जायेगा |[vi] महिलाओं पर आज भी मन्दिर जैसे पवित्र माने जाने वाले स्थानों में प्रवेश पर प्रतिबंध है |

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा वर्ष 1995 में बीजिंग में हुए विश्व महिला सम्मलेन से पहले जारी की गयी मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार पूरे विश्व की संसद में महिलाओं की औसत संख्या पुरुषों की तुलना में मात्र 10 प्रतिशत थी और मंत्री स्तर की स्थिति तो और भी दयनीय बताई गयी थी | इस में तो महिलाओं का औसत 6प्रतिशत ही था |

राजनीतिक विकास के मुख्य रूप से चार पक्ष है :-

1. राजनीतिक जागरूकता ,
2. राजनीति में भागीदारी ,
3. राजनीतिक नेतृत्त्व करना एवं ,
4. नेतृत्त्व प्राप्त कर निर्णयों को प्रभावित करना |

अधिकांश भारतीय नारी इन चारों ही पक्षों पर खरी नहीं उतर पाती | उन्हें राजनीतिक गतिविधियों की जानकारी परिवार के पुरुष सदस्यों से मिलती है,फलत:वे उसी चश्मे से देखने लगती है, उनकी अपनी सोच विकसित नहीं हो पाती | उन्हें किस राजनीतिक दल या व्यक्ति को वोट देना है, यह भी परिवार के पुरुष ही तय करते है | अगर किसी महिला की उम्मीदवारी तय करनी है तो महिला से उक्त सम्बन्ध में कोई राय नहीं ली जाती | पुरुष सदस्य नामांकन पत्र भर देंगे, वहीप्रचार प्रसार करेंगे, और चुनाव जीतने पर वही पद की शक्तियों का उपयोग करेंगे | इन परिस्थितियों में राजनीतिक शब्दकोष में एक नया शब्द " सरपंच पति " जुड़ गया | जिसका तात्पर्य है पंच, सरपंच तो महिला बनेगी, लेकिन वह अपने पद की शक्तियों का प्रयोग स्वतन्त्रता के साथ नहीं करेगी बल्कि उन शक्तियों का प्रयोग उसका पति करेगा |

प्राय: राजनीतिक दल महिलाओं को आम चुनावों में प्रयाप्त संख्या में उम्मीदवार नहीं बनाते | उनका तर्क होता है कि महिलाएं चुनाव जीत नहीं सकती किन्तु "वीमेंस पोलिटिकल वाच " नामक संस्था के सर्वेक्षण के अनुसार राजनीतिक दलों की यह अवधारणा पूर्णत: निर्मूल व आधारहीन है | 1957 से लेकर 2009 तक के चुनावों का विश्लेषण बताता है कि 1996 को छोड़ कर सभी चुनावों में महिला प्रत्याशियों की जीत का प्रतिशत पुरुष उम्मीदवारों से सदैव अधिक रहा है | 15 वीं लोकसभा चुनाव, 2009 में कुल 556 महिलाओं ने चुनाव लड़ा, जिसमें से 58 यानि 10.68 प्रतिशत महिलाएं जीती, जबकि कुल 7514 पुरुष उम्मीदवारों में से 485 यानि मात्र 8 प्रतिशत जीते | 15 वीं लोकसभा में सर्वाधिक 59 महिलाएं संसद में पहुंची| महिला आबादी के हिसाब से ये अत्यंत कम है |

महिलाओं की राजनीतिक निष्क्रियता का कारण :-

भारतीय महिलाओं की राजनीतिक गतिशीलता को रोकने वाले अनेक कारण है, जैसे :-

1. भारतीय सामाजिक संरचना,
2. महिलाओं की अशिक्षा,
3. महिलाओं में संकोच,
4. परिवार में निर्धनता,
5. बालक व बालिका में भेदभाव,
6. नैतिकता के दोहरे मापदंड,
7. महिलाओं की आर्थिक पराधीनता,
8. महिलाओं में असुरक्षा का भाव,
9. विभिन्न राजनीतिक दलों में सत्ता प्राप्ति एवं स्वार्थ दूषित प्रवृति,
10. समाज में नैतिकता का आभाव,
11. भारत में खर्चीली चुनाव प्रणाली,
12. महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता का अभाव,
13. राजनीति में मनी व मसल्स पावर का बड़ता प्रयोग |

भारतीय महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता की दिशा में 73 वां 74 वां संविधान संशोधन विधेयक आशा की किरण बनकर सामने आया | जिसके दूरगामी परिणाम अब सामने आने लगे है | पंचायतों के प्रथम चरण के चुनावों में 10 लाख महिलाऐं पंचायतों में चुनी गयी | जो अब बढ़ कर 12 लाख तक पहुंच गयी है | स्थानीय राजनीति में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के दूरगामी सामाजिक व राजनीतिक परिणाम होते है .....| उनके कार्यकाल के प्रथम चरण की समाप्ति पर उनमें से बहुत सी महिलाएं शराबखोरी, गरीबों के लिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली, अकाल रहत कार्यों के लिए न्यूनतम पारिश्रमिक आदि के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न उठाया करती थी | उनकी बोलचाल की कुशलता में नाटकीय वृद्धि हो गयी थी और वे जल , उन्नत स्वास्थ्य, शैक्षणिक सेवाओं, पंचायतों को अधिकार देने तथा आर्थिक सहायता आदि की मांग करने लग गयी थी |[vii]

अब शक्ति सूचक संगठनों में भाग लेने, निर्णय लेने, महिला प्रतिनिधियों की शीघ्र प्रगति करने व कुछ सिखने के लिए उन्हें एक मंच मिल गया है | इससे महिलाओं के ज्ञान भंडार में नाटकीय परिवर्तन स्पष्ट दिखाई देता है | उत्कृष्ट महिला अध्यक्षाओं व पंचायती राज संस्थाओं की सदस्याओं के आज अनेक उदाहरण है | [viii]विशिष्ट आत्म प्रेरणा व नेतृत्व का प्रदर्शन इस धारणा का विरोध करता है कि महिलाएं मात्र स्थानापन्न प्रतिनिधि बन सकती है | यह स्थिति मात्र 15 वर्षों में हुए विकास कार्यों का परिणाम है | आगे होने वाले गुणात्मक परिवर्तन तो निश्चित ही क्रन्तिकारी साबित होंगे |

महिलाओं में राजनीतिक विकास के उपाय :-

उपरोक्त सभी स्थितियां महिलाओं के राजनीतिक विकास की परिपक्व अवस्था नहीं है | यह राजनीतिक समानता की शुरुआत, अपनी पूर्णावस्था को प्राप्त कर सके, इसके लिए अग्रलिखित प्रयासों की आवश्यकता है –

1. महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता उत्पन्न करने के लिए सर्वप्रथम समानता पर आधारित सामाजिक संरचना की स्थापना की महत्ती आवश्यकता है |,
2. महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्म निर्भर बनाना होगा | उनमें साहस , त्याग और निर्भीकता की भावना का विकास किया जाये |
3. परिवार व समाज में स्त्री व पुरुष एक दूसरे के सहयोग से अपने दायित्वों का निर्वाह करें , यह भावना विकसित करनी होगी |
4. बालक व बालिकाओं को प्रारम्भ से ही समान रूप सेशिक्षा प्रदान की जाये, यह व्यवस्था ग्रामीण स्तर से प्रारम्भ की जाये |
5. आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है, अत: सामाजिक परिवर्तन लाने हेतु समाज का नजरिया बदलना होगा एवं महिलाओं में व्याप्त हीन भावना का अंत करना होगा |
6. सरकार द्वारा महिला सुरक्षा की पूर्ण गारंटी ली जाये एवं महिलाओं के प्रति बढ़ते हुए अपराधों के प्रति कठोर रुख अपनाया जाये |
7. महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता उत्पन्न की जाये, इसके लिए शिक्षित व जागरूक महिलाओं को प्रौढ़ शिक्षा से जोड़ा जाये | बुद्धिजीवी वर्ग समस्या की तह तक जाकर समाधान खोजे |
8. विभिन्न राजनीतिक दल महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में आनेहेतु प्रोत्साहित करे , उन्हें चुनावों में अधिकाधिक प्रत्याशी बनाये | राजनीतिक दलों द्वारा निजी स्त्रोतों व सरकारी अनुदान से महिला राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए राहत कोष की स्थापना की जाये | समय समय पर सम्मेलन आयोजित करके ग्रामीण महिलाओं को इससे जोड़ा जाये |

वर्षों से पीड़ित व शोषित महिलाओं से यह उम्मीद करना तो बेकार है कि वे कुछ ही समय में गर्त से उठकर फलक पर चमकने लगे | लेकिन सक्रिय सहयोग व दृढ इच्छा शक्ति के बल पर हम महिलाओं व पुरुषों की राजनीतिक वसामाजिक सजगता में संतुलन बैठा सकते हैऔर इसके लिए प्रयास जारी है |

अंततः कहा जा सकता है कि अगर हमें राजनीति को अधिक समतामूलक, मूल्यपरक, भ्रष्टाचार मुक्त तथा समाधान मूलक बनाना है तो राजनीतिक तथा सामाजिक क्रिया के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ानी होगी |

सन्दर्भ

[i]लुसियन पाई, आस्पेक्ट ऑफ पोलिटिकल डवलपमेंट , बोस्टन लिटिल ब्राउन, 1966, पृष्ठ 45-47

[ii]शैल मायाराम, प्रज्ञा शर्मा (सं)भारतीय समाज में नारी , पॉइंटर पब्लिशर्स, 2001, पृष्ठ 16

[iii]कुरुक्षेत्र , मार्च , 2007

[iv] गाँधी : संस्मरण और विचार, गाँधी शांति प्रतिष्ठान तथा सस्ता साहित्य मंडल का संयुक्त प्रकाशन, नई दिल्ली, 1968 ,पृष्ठ 355

[v]सुशिल गोयल, संगीता गोयल, आर. बी. एस. ए. पब्लिशर्स, 2001, पृष्ठ. 16

[vi]शैल मायाराम, प्रज्ञा शर्मा (सं),भारतीय समाज में नारी , पॉइंटर पब्लिशर्स, 2001, पृष्ठ. 21

[vii]उपरोक्त 6 .....पृष्ठ 19

[viii]उपरोक्त